International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(II), October - December, 2024, pp. 107-112

भारत तथा राजस्थान में सूफीवाद का उद्‌य एवं विकास का अध्ययन

जगदीश प्रसाद बैरवा*

सार

भारत में मध्यकाल को महान सांस्कृतिक के युग के रूप में जाना जाता है। इस काल में सांस्कृतिक विकासों के एक नए चरण की शुरुआत हुई। तुर्क और मुगलों ने नए विचारों को पेश किया तथा धर्म, दर्शन और विचार, भाषा और साहित्य, स्थापत्य कला की शैलियां और इमारत निर्माण सामग्री का प्रयोग, चित्रकला और ललित कला के क्षेत्रा में नई विशेषताओं का जन्म हुआ। भारत हर क्षेत्रों में पहले ही सांस्कृतिक रूप से काफी समद्ध था। विभिन्न संस्कृतियों के संश्लेषण ने नई दार्शनिक तथा धार्मिक परम्पराओं, विचारों और संस्कृति के नए रूपों और शैलियों को जन्म दिया।

शब्दकोशः *सूफीवाद, उद्‌य, विकास, रहस्यवाद, सम्प्रदाय।*

प्रस्तावना

''तसव्वुफ'' के तत्व दुनिया के हर धर्म में पाए जाते हैं। यह अलग बात है कि उनका नाम देश के समय के अनुसार बदलता रहा। पश्चिम हो या पूर्व, यह हर जगह दिखाई देता है। मूल मान्यता हर देश के सूफियों में एक ही है। प्रत्येक सूफी का लक्ष्य परम सत्ता की खोज, उसका अनुभव, उसकी दृष्टि, उसकी निकटता और उससे आगे रहा है। तसव्वुफ को प्यार पर आधारित कहा जाता है।

डॉ. जमीला अली जाफरी ने लिखा है – प्रेम सूफी साधना की प्रमुख धुरी है। इसका स्वरूप इतना सार्वभौम है कि कोई भी देश, कोई जाति, कोई समुदाय इससे वंचित नहीं है। प्रेम और मानवता की सेवा इन सूफियों का लक्ष्य रहा है। यही कारण है कि सूफीवाद जनता के बीच फलता–फूलता और फलता–फूलता रहा।

सूफीवाद और भारत

इस्लाम के आगमन के साथ ही भारत और राजस्थान में सूफीवाद का प्रचार–प्रसार भी शुरू हो गया। जल्द ही सूफीवाद की जड़ें राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित हो गईं और संतों ने अपनी भूमिका निभानी शुरू कर दी।

इस तथ्य का अध्ययन सुविधानुसार दो चरणों में प्रस्तुत किया गया है –

- **सूफीवाद :** जिसमें सूफी शब्द की उत्पत्ति, सूफीवाद का उद्‌भव, सूफीवाद की परिभाषा, सूफीवाद का विकास आदि को क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है।

---

* सहायक आचार्य (इतिहास विभाग), राजकीय महाविद्यालय, रैणी, अलवर, राजस्थान।

- **भारत में सूफीवाद का विकास :** हमीदुद्दीन नागौरी, शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, फरीदुद्दीन मसूदगंज–ए–शकर, निजामुद्दीन औलिया, दिल्ली के शेख नसीरुद्दीन चिराग, शेख सलीम चिश्ती, ख्वाजा गैमूदराज, क्रमशः चिश्ती संप्रदाय के सूफी संत। दान, सुहरावर्दी सूफी आदेश, शेख सदुद्दीन आरिफ शेख रुकनुद्दीन अबुल फतह, शेख जलालुद्दीन सुर्ख, शेख शर्फुद्दीन याहया मनेरी, कादिरी सिलसिला – हामिदगंज बख्श, नक्शबंदी सिलसिला – शेख अहमद सरहिंदी, शाहबाकी बिल्लाह और ख्वाजा मिरदर्द।

सूफी शब्द की उत्पत्ति

इस्लाम के रहस्यवाद या सूफियों के दर्शन को तसव्वुफ के नाम से जाना जाता है। सूफी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में अनेक विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत व्यक्त किए हैं। अबू नस्र अल–सरज ने ''किताब–अल–लूमा'' में सूफी शब्द के बारे में लिखा है। ''सूफी'' शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द ''सूफ'' से हुई है जिसका अर्थ ''ऊन'' होता है। अरब देश में सात्विक विचारधारा वाले संत ऊनी वस्त्र धारण करते थे, इसलिए उन्हें ''सूफी'' कहा जाता था।

मिस्टर ब्राउन कहते हैं कि यह बिल्कुल निश्चित है कि सूफी शब्द ''सूफ (ऊन)'' से बना है। फारसी में फकीरों को 'पश्मीनापोश' (ऊन पहनने वाला) कहा जाता है। इससे भी इस मत की पुष्टि होती है।

कुछ लोग इसे ग्रीक शब्द 'सोफिया' (ज्ञान) का रूपांतर मानते हैं। अधिकांश विद्वान इसकी उत्पत्ति 'सफा' शब्द से मानते हैं। उनका कहना है कि जो व्यक्ति पवित्र था उसे सूफी कहा जाता था। अलबरूनी का कहना है कि वह सोचता है कि इसका मतलब उस युवा से है जो सफी (शुद्ध) है। उनके अनुसार यह सफी ही सूफी हो गया है–अर्थात् विचारकों का समूह। कुछ कहते हैं कि मदीना में मुहम्मद साहब द्वारा बनाई गई मस्जिद के बाहर 'सफ' यानी चबूतरे पर आकर शरण लेने वाले और पवित्र जीवन जीने वाले और खुदा की इबादत में तल्लीन रहने वाले बेघर लोगों को सूफी कहा जाता था। एक समूह ने इसकी उत्पत्ति 'सफ' (पंक्ति) से मानी है। उनके अनुसार, ये लोग सूफी कहलाते हैं जिन्हें फैसले के दिन अन्य लोगों से अलग पंक्ति में खड़ा किया जाएगा क्योंकि वे पवित्र और ईश्वर के भक्त हैं।

इस प्रकार यह मत दृढ़ हो गया कि जो सन्यासी ऊनी वस्त्र पहनकर अपने धर्म का प्रचार करने के लिए इधर–उधर घूमते थे, वे 'सूफी' कहलाते थे। दिसंबर 1945में त्रिवेंद्रम में मीर अलीउद्दीन ने सूफी शब्द की उत्पत्ति पर विचार करते हुए अखिल भारतीय दर्शन कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्लामी दर्शनशास्त्र के एक भाषण में सूफी शब्द से सूफी शब्द की उत्पत्ति पर जोर दिया। इस प्रकार एक सूफी एक धार्मिक साधक है जो ऊनी कपड़े पहनता है और प्रियतम के रूप में ईश्वर की पूजा करता है।

सूफीवाद का उदय

सूफीवाद दुनिया के अन्य धर्मों की तरह प्राचीन नहीं लगता। यह नौवीं शताब्दी में एक धर्म के रूप में विकसित हुआ। सूफीवाद का तत्व न केवल इस्लाम से लिया गया है बल्कि विश्व के अन्य धर्मों ने भी इसे प्रभावित किया है। निकोल्सन का कहना है कि 'तसव्वुफ की बुनियाद निश्चित रूप से इस्लामी है'।

डॉ. युसूफ हुसैन का मत है कि सूफीवाद का जन्म इस्लाम के गर्भ में हुआ था।

प्रो. निजामी ने सूफीवाद के उदय पर अन्य धर्मों के प्रभाव को स्वीकार करते हुए स्पष्ट रूप से लिखा है, 'सूफीवाद का मूल स्रोत कुरान और पैगंबर मुहम्मद की जीवनी है।'

कई विद्वानों का मत है कि तसव्वुफ एक महासागर की तरह है जिसमें विभिन्न देशों की छोटी–छोटी नदियाँ आकर अपना घनत्व बढ़ा लेती हैं।

निकोलसन सूफीवाद के उद्भव में ग्रीक प्रभाव को विशेष महत्व देते हैं। उनके अनुसार ईरान और यूनान के संबंध प्राचीन काल से हैं। सभ्यता और संस्कृति के कई क्षेत्रों में इन देशों के बीच विचारों का आदान–प्रदान हुआ।

ब्राउन के अनुसार, इस प्रभाव ने इस्लाम के तपस्वी जीवन में रहस्यमयी प्रवृत्तियों के प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया। ब्राउन ने सूफीवाद पर बौद्ध धर्म और जैन धर्म के प्रभाव को स्वीकार किया है। सूफीवाद से संबंधित शांति और अहिंसा के तत्व ईसाई, हिंदू, बौद्ध और जैन सिद्धांतों में पाए जाते हैं। भारतीय मुस्लिम सूफियों ने शांति और अहिंसा के जिन सिद्धांतों को अपनाया, वे ईसाई धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म की विशेषताएं हैं और इनमें से अंतिम तीन की उत्पत्ति भारत में हुई। अबू–अब्दुल्ला–अल–मुहासिनी नाम के एक सूफी संत ने अपने संदेश में बाइबिल के कुछ विषयों का उल्लेख किया था। सूफियों की यौगिक क्रियाओं में हिंदू तपस्वियों की गतिविधियों को देखा जा सकता है। सूफियों में परमानंद उत्पन्न करने वाली प्राणायाम जैसी कुछ क्रियाएं और विधियां निस्संदेह हिंदू धर्म की देन हैं। अधिकांश विद्वान मानते हैं कि सूफी मत के विकास में भारतीय चिंतन का प्रभाव रहा है। शेख (खानकाह के प्रमुख) को नमन करना, आने वाले आगंतुकों को पानी देना, कमंडल रखना, नए अनुयायियों के सिर मुंडवाना, भक्तों का जमावड़ा और चिल्ला–ए–मकूस (शरीर की यातना) हिंदू और बौद्ध के समान हैं। प्रथाओं। इसी प्रकार डॉ. ताराचंद ने ठीक ही लिखा है कि सूफीवाद वह स्रोत है जिसमें अनेक देशों की नदियाँ सम्मिलित हैं। कुरान और पैगंबर मुहम्मद का जीवन इसके मुख्य स्रोत हैं। यह ईसाई धर्म और नव–प्लैटन दर्शन के प्रभाव के कारण विकसित हुआ। यह हिंदू, बौद्ध सिद्धांतों और नास्तिक मान्यताओं से बहुत प्रभावित था।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इस्लाम, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, वेदांत और हिन्दू धर्मों ने सूफीवाद के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सूफीवाद इन धर्मों का ऋणी रहेगा।

प्रो. निजामी का मत है कि यह प्रभाव अनुकरण के रूप में नहीं था, अपितु उन बाह्य विचारधाराओं को सूफी साधकों एवं तत्वमीमांसीय चिन्तकों ने अपने–अपने ढंग से अपनाया और सूफी मत का विकास इस्लाम धर्म को ध्यान में रखकर हुआ है।

सूफीवाद की परिभाषा

''तसव्वुफ'' या ''सूफीवाद'' की कोई निश्चित परिभाषा देना मुश्किल है क्योंकि यह अल्लाह और बन्दे के बीच का ऐसा अनुभव है कि अनुभव करने वाला इसे पूरी तरह व्यक्त करने में सफल नहीं होता चाहे वह इसे व्यक्त करने की कोशिश करे।

प्रो. के.ए. निजामी, ''सूफीवाद उच्च स्तरीय स्वतंत्र विचार का एक रूप है।''

हुजवीरी के अनुसार, ''सूफी संतों के लिए सूफीवाद का सिद्धांत सूर्य के समान स्पष्ट है। इसलिए इस बारे में किसी तरह की सफाई देने की जरूरत नहीं है।''

मारुफ–अल–करखी के अनुसार, ''ईश्वर के बारे में सच्चाई जानना और मानवीय वस्तुओं का त्याग करना सूफीवाद का धर्म है।''

अबुल हुसैन अन्नुरी की नजर में, ''दुनिया से नफरत और खुदा से मोहब्बत सूफीवाद है।'' अल–कुशरी ने, ''बाहरी और आंतरिक जीवन की पवित्रता को सूफीवाद माना है।''

अगर हम यहां ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि यहां दी गई सूफीवाद की सभी परिभाषाओं में बाहरी और आंतरिक शुद्धता पर विशेष जोर दिया गया है। अपनी सभी इच्छाओं और कामनाओं को समर्पित कर देना और खुद को ईश्वर के हवाले कर देना सूफियों का परम कर्तव्य माना गया है।

डॉ. ताराचंद ने लिखा है– ''सूफीवाद तीव्र भक्ति का धर्म है।'' प्रेम उसका भाव है, काव्य, संगीत और नृत्य उसकी उपासना के साधन हैं और परमात्मा से मिलन उसका आदर्श है।

डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने लिखा है– ''सूफियों के दो लक्ष्य थे– एक अपनी आध्यात्मिक उन्नति करना और दूसरा इस्लाम और मानवता की सेवा करना।''

विभिन्न परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि मुस्लिम साधकों द्वारा रीति–रिवाजों से विमुख होकर इस संसार की एक झलक पाकर व्यक्त किए गए रहस्यों के सामंजस्य का नाम ही सूफीवाद है। इसलिए तसव्वुफ या सूफीवाद भी एक रहस्यवाद है जो स्वतंत्र होते हुए भी मूल रूप से मुस्लिम समुदाय से संबंधित है।

डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने लिखा है कि ''इस्लामिक रहस्यवाद को ही सूफी धर्म कहा जाता है। सूफीवाद इस्लामी रहस्यवाद का एक रूप है।''

सूफीवाद का विकास

इस प्रकार सूफीवाद एक ऐसा आंदोलन था जिसने लोगों को ऐसे समय में मानवता का पाठ पढ़ाया जब मूल्यों का पतन हो रहा था। सामाजिक जीवन के विनाश और नैतिकता के पतन को रोकने के लिए सूफीवाद का विकास आवश्यक था। इसी जरूरत से प्रेरित होकर इस्लाम की रक्षा और मजबूती के लिए सूफीवाद का विकास हुआ।

प्रो. निजामी कहते हैं कि सूफीवाद का विकास मानव संस्कृति, मुस्लिम समाज, नैतिकता और आध्यात्मिक सिद्धांतों की रक्षा के लिए हुआ था।

प्रो. हबीब के अनुसार इस्लामी संस्कृति ने चुनौतियों का सामना किया, सूफी और रहस्यवादी विचार ने इस्लाम की रक्षा की और उसे शक्ति प्रदान की, परिणामस्वरूप कोई भी चुनौती इस्लाम को नष्ट करने में सफल नहीं हुई।

इस्लाम (सूफीवाद) के इस महत्वपूर्ण रक्षक को सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

- **पहला चरण :** इस व्यवस्था में सूफी संतों में फकीर जीवन जीने की प्रवृत्ति विद्यमान थी। सूफी साधक सांसारिक सुखों से दूर रहता था। उसमें परमेश्वर के दण्ड का भय विद्यमान था। वे धन, स्त्री और संसार की सभी वस्तुओं को त्याग कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते थे।

समकालीन समाज और राज्य में अव्यवस्था, अराजकता और अव्यवस्थित आचरण का बोलबाला था। उस समय सूफी संतों ने अपनी प्रेम वाणी से लोगों के मन में एक नई रोशनी का संचार किया था। एशिया के मुस्लिम देशों में त्याग की लहर फैल चुकी थी। आठवीं शताब्दी में खुरासान राजनीतिक और धार्मिक आंदोलन का केंद्र बन गया। इस काल में सूफीवाद का आधार व्यक्तिगत था। इमाम हसन बसरी (738), इब्राहिम बिन आगम 777), अबू हासिम (777), राबिया बसरी (776) के नाम इस मंच के प्रमुख साधक हैं। ईसा की आठवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में सूफी संतों की मानसिक शक्ति और अधिक प्रबल हुई और सूफी संतों ने परमात्मा की सर्वव्यापकता और प्रवृत्ति के प्रत्येक वस्तु में परमात्मा को देखने के सिद्धांत को और अधिक अपनाया।

- **दूसरा चरण :** इस अवस्था में रहस्यात्मक प्रवृत्तियों का आविर्भाव एवं उत्तरोत्तर विकास, सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक चिन्तन की प्रधानता रही है। हसन बसरी के अनुसार संसार अपने आप में नीरस और नकारात्मक है। लेकिन जब उसमें आध्यात्मिक भाव सक्रिय हो जाते हैं तो उसका रूप बदल जाता है। सारे दुख सुख में बदल जाते हैं। दिल और दिमाग का खूबसूरत मेल उस वक्त देखने को मिलता है। इसी अवस्था में सूफी संत ईश्वर को प्रियतम के रूप में देखने लगे। उनके सभी धार्मिक कृत्यों का उद्देश्य प्रिय को प्राप्त करना था। अपने अहंकार को त्याग कर वह नासमझी की स्थिति में परमप्रिय का साक्षात्कार करने लगा।

- **तीसरा चरण :** सूफी सम्प्रदाय का उदय 12वीं और 13वीं शताब्दी में हुआ। सूफी संतों ने मुस्लिम समाज में व्याप्त अराजकता, अव्यवस्था, नैतिक पतन का सामना करने तथा उसमें नवजीवन प्रदान करने के लिए खानकाह के रूप में संगठित होने का निर्णय लिया।

डॉ. रामपूजन तिवारी के अनुसार सूफी संतों का संप्रदाय के रूप में संगठन कुरान शरीफ की व्याख्या के कारण हुआ। प्रारंभ में सूफीवाद इस्लाम का प्रतिक्रियावादी रूप प्रतीत होता था, लेकिन पहली बार अलघजली

(1058) ने इस्लाम और सूफी के बीच समन्वय स्थापित किया। इसके बाद सूफीवाद को इस्लाम के दर्शन के रूप में जाना जाने लगा। इस अवस्था में सूफीवाद का काफी विकास हो चुका था और इसकी ख्याति भी बढ़ गई थी। अतः लोग सूफी संतों की प्रसिद्धि से आकर्षित हुए और शिष्य बनकर संगठित होने लगे। इस तरह साधकों और संतों ने अपनी–अपनी शिष्यता परंपरा शुरू की। शिष्य परंपरा के प्रारंभ से ही संगठन शक्ति प्रबल हुई और यही शक्ति इस्लाम को ऐसी शक्ति प्रदान कर सकी जिसके फलस्वरूप इस्लाम दिन–प्रतिदिन आध्यात्मिक रूप से समृद्ध होने लगा।

- **चौथा चरण :** समय बीतने के साथ जैसे दूसरे धर्मों/संप्रदायों में कमियां और भ्रष्टाचार पनपने लगा, वैसे ही सूफीवाद का भी पतन होने लगा। सूफी संतों ने अपने प्राचीन आदर्शों को भूलकर बाह्यताएं अपनानी शुरू कर दी। चमत्कार और अंधविश्वास लोगों के दिलों में घर करने लगे। जादू–टोना और तंत्र–मंत्र का बोलबाला नजर आने लगा। ऐसे में जब विज्ञान ने तरक्की की और तर्क को महत्व दिया तो पाखंड और अंधविश्वास पर आधारित फिजूलखर्ची की ईंटें खिसकने लगीं। लोगों ने पुरानी मान्यताओं को त्याग दिया और नई मान्यताओं को स्वीकार करना शुरू कर दिया। जायज बातें मानी जाने लगीं। इस तरह लोगों का सूफीवाद में दृढ़ विश्वास धीरे–धीरे कम होने लगा और एक समय ऐसा आया जब सूफीवाद लगभग मृतप्राय हो गया।

राजस्थान में सूफीवाद का विकास

सूफीवाद का विकास मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ मेल खाता है। थोड़े ही समय में सूफी सम्प्रदाय और खानकाह मुल्तान से लखनौती और पंजाब से देवगिरि तक फैल गए। इतनी जल्दी सफलता का कारण यह था कि सूफी संतों ने खुद को राजस्थान की सामाजिक और धार्मिक माहौल में ढालने का फैसला किया। सूफी साधकों ने राजस्थानी परिवेश के साथ खुद को ढाला और खुद को ढाल कर सूफीमत को प्रभावशाली बनाने की कोशिश की। इन सूफी संतों ने राजस्थानियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाकर राजस्थानियों को अपने धर्म की ओर आकर्षित किया। इसके लिए उन्होंने राजस्थानी हिंदुओं के रीति–रिवाजों को भी अपनाया।

डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने लिखा है कि सूफी हिन्दुओं और विशेषकर निचली जाति के हिन्दुओं को इस्लाम का सन्देश देने के लिए उत्सुक थे। इसलिए हिंदुओं को प्रभावित करने और उन्हें इस्लाम कबूल कराने के लिए सूफियों को लोगों की भाषा सीखनी पड़ी और अपने तत्कालीन प्रचलित धर्म के दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों को नहीं तो कम से कम उनके रीति–रिवाजों को समझना पड़ा। सूफी संतों का दार्शनिक समूह वेदान्त से अत्यधिक प्रभावित था, यही कारण था कि वे धर्मांतरण को अनावश्यक मानते थे। सूफी संतों का दूसरा वर्ग अशिक्षित था, इसलिए इन लोगों ने तंत्र–मंत्र और बाहरी आडंबर को अपनाया। उनके चमत्कारी कार्यों से कई हिंदू आकर्षित हुए।

इस काल के सूफी संतों ने अपने धार्मिक प्रचार के माध्यम से हिंदू और मुस्लिम जातियों के बीच नफरत की भावना को दूर करने की पूरी कोशिश की, जबकि सुल्तान बल या प्रलोभन से अधिक से अधिक हिंदुओं को मुसलमान बनाने की कोशिश कर रहे थे। उस समय इन संतों ने अपनी प्रेम वाणी द्वारा हिन्दू और मुसलमानों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।

सूफीवाद ने हुजवेरी के आगमन के साथ भारत में प्रवेश किया। वह अफगानिस्तान के गजनी का रहने वाला था। दौरे के दौरान वे भारत आ गए और लाहौर में रहने लगे। 1026 में उनकी मृत्यु हो गई। भारत पर मुस्लिम विजय के बाद राजस्थान में विभिन्न सूफी संप्रदाय स्थापित हुए। चिश्ती और सुहरावर्दी सूफी मतों ने विशेष रूप से राजस्थान के विभिन्न भागों में जड़ें जमा लीं। कादरी, नक्शबंदी, शतारी और मदारी संप्रदायों ने भी इसी तरह अपना काम शुरू किया। जिस सम्प्रदाय को सबसे अधिक सफलता मिली वह चिश्ती सम्प्रदाय था।

निष्कर्ष

सूफी कवियों की हिंदी कविता का भारतीय धर्म, ध्यान, चेतना, समाज और संस्कृति के अभिलेखों में उत्कृष्ट क्षेत्र है। सूफी दर्शन और अभ्यास का अनूठा मूल्यांकन सूफी साहित्य के स्पष्टीकरण में उपयोगी है। किसी भी युग की रचनाओं के बारे में जानने और उन पर विचार करने के लिए, आधुनिक समय के साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश के बारे में पता लगाना बेहद जरूरी है। कवि का काव्य प्राचीन परम्पराओं का संवाहक भी है। इसलिए, आधुनिक प्रवृत्तियों के साथ–साथ अतीत के घटनाक्रमों के बारे में जानना भी आवश्यक है। सूफी काव्य के ऐतिहासिक अतीत की संरचना करने वाले ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक शर्तों का अध्ययन इस दृष्टिकोण से किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. फारूकी, आजाद, आई. एच.(1984) : सूफीवाद एवं भक्ति, अभिनव पब्लिकेशन।
2. भारद्वाज डॉ. हेतु, पंचशील समीक्षा त्रैमासिक पत्रिका (जनवरी मार्च 2010) पंचशील प्रकाशन जयपुर लेख– ''अवतारवाद का समाज शास्त्र और लोकधर्म''
3. रामप्रसाद व्यास : आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
4. संपादक, वासुदेव पी.जी., संग्रथन मासिक पत्रिका (जुलाई 2013) हिन्दी विद्यापीठ केरल, लेख– ''रामचरित मानस में सामाजिक जीवन''।
5. सिंह, डॉ. वासूदेव (सन 2001) – हिन्दी संत काव्य समाज ाास्त्रीय अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. डॉ. सु ील त्रिवेदी (संयोजक), बाबू लाल शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, भाशा संस्कृति और चिन्तन।
7. सिंह, डॉ. वासूदेव (सन 2001), हिन्दी संत काव्य समाजशास्त्रीय अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
8. द्विवेदी हजारी प्रसाद, मध्यकालीन धर्म साधना, पृ. 51.
9. सिंह योगेन्द्र, सम्पादक, संत रैदास, दिल्ली, अक्षर प्रकाशन प्रा . लि . , 1972, पृ . 190.
10. संवत 1879 ई. के हस्तलिखित पत्र पांचला से प्राप्तराजस्थान का आध्यात्मिक परिचय, पृ. 31
11. जैन, एस.एस., आधुनिक राजस्थान का इतिहास, जयपुर 2017।
12. गुप्ता के. एस. एण्ड ओझा, जे.के., राजस्थान का इतिहास एक सर्वेक्षण आरम्भिक काल से 1956 ईस्वी तक, जयपुर 2018।

❖◆❖